प्रातः क्लास 1/11/1968 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप जानते हैं कि रूहानी बच्चे सामने बैठे हैं। रूहानी बच्चे भी जानते हैं कि रूहानी बाप सामने बैठे हैं। यह भी जानते हो रूहानी बाप तो एक ही है। अभी रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं जिन बच्चों के अंदर में यह दिल होती है कि हम कुछ साक्षात्कार करें तो निश्चय हो जाये कि हम फलाना पद पावेंगे या जो पद प्राप्ति करना है उनका भी सा॰ करें। टीचर का भी सा॰ करें। टीचर जो पढ़ाते हैं और जो पद प्राप्त कराते हैं उनका भी सा॰ करें। जिनको अंदर में दिल होती है सा॰ करें वह हाथ उठावे। जैसे भक्ति में सा॰ के लिए कितनी नौधा भक्ति करते हैं। भक्ति माल भी है ना। यह फिर है रुद्रमाल। इनमें फिर सभी बच्चे हैं। वह बच्चे नहीं कहेंगे। वह है भक्ति। यह रुद्रमाल है ईश्वर की माला। तो जिनके दिल में आस है कि हम ईश्वर का सा॰ करें, कृष्ण अथवा ना॰ का सा॰ करें, वह हाथ उठावे। (कइयों ने हाथ उठाई।) हाथ जिन्होंने उठाये हैं उन्हों के नाम नोट करो। बाबा के पास कई आते हैं, बोलते हैं, बाबा हमको सा॰ होगा? तो बाबा पूछते हैं, किसका सा॰ चाहिए? कहते हैं, शिवबाबा का भी सा॰ चाहिए और देवता पद का भी सा॰ चाहिए। हम ध्यान में जाना चाहते हैं। यूँ तो चित्र में भी देखते हैं यह ल॰ना॰ खड़े हैं ना; परंतु चाहते हैं सा॰ हो, तो निश्चय बैठे। बिगर सा॰ निश्चय कैसे हो? फिर इन्हों को जो ब्रह्माकुमारियाँ पढ़ाती हैं उनसे पूछेंगे तुम क्यों नहीं इनकी सा॰ की आस पूरी करती हो? तुम बच्चे जानते हो एक बाप को जानने से हमारी सभी आशाएँ, मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। फिर यह मनोकामना कहाँ से निकली? गायन है ना बेहद के बाप को जानने से सभी कामनाएँ 21 जन्मों के लिए पूरी हो जाती हैं। अभी फिर सा॰ चाहते हैं सा॰ हो। यह तो है जानने की बात। शिव का चित्र भी रखा है। फिर पहचान देते हैं। कब शिव का मंदिर देखा है, उसमें शिव का चित्र देखा है आँखों से? सा॰ तो फिर दिव्य दृष्टि से करेंगे। वह कोई देखने की चीज़ तो है नहीं, है जानने की। मैं आत्मा हूँ, बरोबर परमपिता परमात्मा का बच्चा हूँ। हम भी बिन्दी मिसल हैं। इन आँखों से देखा नहीं जा सकता। बिन्दी को देखने से भी कोई फायदा नहीं। निश्चय तो है वह बिन्दी है। भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। रोज़ समझाया जाता है। यह शरीर ऑरगंस हैं। इन द्वारा आत्मा पार्ट बजाती है। बिन्दी को देखना बड़ा मुश्किल है। कोई को बैरिस्टर बनना होगा तो जाकर बैरिस्टर को देखेंगे, यह है पढ़ाने वाला, उनका नाम फलाना है। इस पढ़ाई से हम बैरिस्टर बन जावेंगे। सिर्फ टीचर को देखने से तो नहीं बनेंगे। वह है देहधारी का देहधारी से योग। टीचर पास कोई बिगर एमऑबजेक्ट तो पढ़ न सके। फिर अंदर में संशय रह जाता है। बच्चा जन्म लेता है और समझा जाता है यह बच्चा पैदा हुआ है, फलाने के प्रॉपर्टी का वारिस बनेगा। पहले से ही जाना जाता है, फलाने का बच्चा इनके प्रॉपर्टी का मालिक बन जावेगा। बच्चे के ऑरगंस तो छोटे हैं, वह तो जान सकता नहीं। दूसरे जानते हैं यह बच्चा इनके प्रॉपर्टी का वारिस बना। कोई शादी करते हैं, तो कहेंगे इनके मिलकियत की यह अर्धांगनी ठहरी। तुम बच्चे तो यहाँ एडॉप्टेड होते हो। तो यह जानना चाहिए हम फलाने के एडॉप्टेड बच्चे हैं। एडॉप्ट होती हूँ। इससे पहले जानना चाहिए ना, हमको क्या मिलना है। तुम उनके बच्चे बनते हो, शिवबाबा कहते हो तो बाप की प्रॉप्टी का ज़रूर मालूम होना चाहिए। यह तो जानते हो बाप को जानने से सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं। बाकी क्या चीज़ का सा॰ करें जबकि एडॉप्ट हो चुके। समझ से एडॉप्ट होना होता है ना। बिगर समझ तो एडॉप्ट हो न सके। समझ बिगर एडॉप्ट होते हैं तो उनको जानवर से भी बदतर कहा जाता है। तुम बाबा समझ कर यहाँ आते हो। बाबा समझने बिगर तो आ नहीं सकते। अगर बाप समझने बिगर आ जाते हैं तो गोया ब्राह्मणी का दोष है। जानते नहीं हैं हम बाबा पास जाते हैं। अंदर में संशय है। पता नहीं है बाबा से हमको क्या मिलना है, कैसे मिलना है। समझते हैं सा॰ हो तब निश्चय हो। अभी सा॰ क्या चीज़ का हो, एडॉप्ट होने के पहले जानना चाहिए ना। एडॉप्ट होने बिगर तो बाप से मिल न सके। कहते हैं सा॰ हो तो निश्चय बैठे। ऐसे बहुतों के ख्याल में आता है। सा॰ न होने कारण, डायरैक्शन मिल.....

हैं (अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो); उस पर चलते ही नहीं, याद किसको करे। यहाँ ऐसा कोई है जिसको शिव का सा॰ हुआ है? जिन्होंने शिव को देखा है वह हाथ उठावे। मैं जानना नहीं कहता हूँ, इन आँखों से देखना कहता हूँ। (जिन्होंने शिव का सा॰ किया था उन्होंने हाथ उठाया) तुमने दिव्य दृष्टि से शिव को देखा है? फिर दूसरे को दिखलाये सकते हो? तुमको किसने सा॰ कराया? (शिवबाबा ने) तुम कैसे कहते हो कि शिवबाबा की आत्मा थी? तुम्हारी आत्मा भी तो बिन्दी ही है। फर्क तो कुछ है नहीं। वह भी बिन्दी है, वह भी बिन्दी है। तुम कहती हो हम शिवबाबा का सा॰ किया, मैं कहता हूँ आत्मा का किया। तुम कैसे कहते हो शिवबाबा किया? फर्क क्या था? इस पर बाबा रात को सभी से पूछेंगे। जिन्होंने सा॰ किया है उनका सेमीनार कराना। शिव का सा॰ किया है या आत्मा का किया है, बाबा परीक्षा लेंगे। तुम कहते हो हमने सा॰ किया है। यह बाबा का रथ बैठा है। यह कहता है हमने तो कभी भी शिव का सा॰ नहीं किया। आत्मा और परमात्मा के सा॰ में कुछ फर्क देखने में नहीं आता। बाप कहते हैं मैं तो ज्ञान का सागर हूँ। तुमको भी बना रहा हूँ। बस और तो कुछ फर्क है नहीं। ऐसे भी नहीं कि बहुत तेजोमय देखने में आवेगा। आत्मा आत्मा ठण्डी दिखाई पड़ेंगी। बाबा खुद कहते हैं हमको सा॰ हुआ नहीं है। बाकी निश्चय है बाप पढ़ाते हैं। सा॰ हो वा न हो इसकी कोई परवाह नहीं। यह तो जानने की बात है। सा॰ भक्तिमार्ग में होते हैं, प्राप्ति कुछ भी नहीं। यहाँ भी जिनको सा॰ होते हैं, प्राप्ति कुछ भी नहीं। बाबा कहते हैं मैंने कोई सा॰ करके धंधा आदि नहीं छोड़ा था। देखते थे, औरों को कृष्ण आदि के सा॰ होते थे; ऐसे कब कोई ने कहा नहीं कि शिवबाबा का हमने सा॰ किया। तो बाबा देखते हैं कौन-2 चाहते हैं हमको सा॰ हो। सा॰ न होगा तो शायद टूट जावेंगे। कहेंगे सा॰ बिगर योग भी कैसे लगा सकते? किसको सा॰ होता है, किसको नहीं होता है। यह भी पता निकालें सा॰ से क्या फायदा होता है, न सा॰ से क्या फायदा होता है। तीखे कौन जाते हैं। ऐसे बहुत आते हैं, कहते हैं—बाबा, हमको सा॰ तब निश्चय हो। वे बिचारे योग तो लगा नहीं सकते। वह आश्चर्यवत कथन्ती, सुनन्ती, पश्यन्ती, भागान्त हो जावेंगे। जिनको निश्चय है वह तो समझते हैं बाप इसमें बैठ हमको पढ़ाते हैं। यह ज्ञान सिवाय बाप के और कोई तो दे न सके। ज्ञान का सागर बाप ही पढ़ाते हैं। ऐसे और कोई कह भी न सके कि तुम अपन को आत्मा समझो, बाप को याद करो। यह बाप ही समझाते हैं। तो ऐसे नहीं कि सा॰ हो तब याद करें। यह तो बुद्धि से समझने की बातें हैं। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। हम ब्रदर्स हैं। बिगर सा॰ के निश्चय बैठ जाता है। इसमें सा॰ की तो दरकार ही नहीं। बुद्धि से समझते हैं हम आत्माएँ सभी भाई-2 हैं। हम भाइयों का बाप एक है। किसको भी समझाने से झट समझ जाते हैं। बाप खुद कहते हैं—हे बच्चो! मैं इनमें प्रवेश कर तुमको पढ़ाता हूँ। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा में ही कर्मों का संस्कार अच्छे वा बुरे रहते हैं। सा॰ तो किसका किया हुआ नहीं है। तुमने कब आत्मा का सा॰ किया है, जो कहते हैं बाबा का किया है? जिसने आत्मा का सा॰ किया है, वह हाथ उठावे। (कोई नहीं) अपना ही सा॰ नहीं किया है, तो फिर बाप का कैसे करेंगे? पहले-2 तो आत्मा को ही रियलाइज़ करना है। आत्मा का सा॰ करें, तब बाप का भी हो। परमात्मा का सा॰ करना कोई ज़रूरत ही नहीं देखने में आते हैं। क्या तुम आस लगाकर बैठते हो कि शिवबाबा का सा॰ हो? भक्तिमार्ग में सा॰ करते हैं, प्राप्ति कुछ तो है नहीं। सिर्फ खुशी होती है। उसमें पुरुषार्थ की तो बात ही नहीं। भल कृष्ण का, विष्णु का सा॰ करें, तो भी फायदा कुछ भी नहीं होता है। यह भी ऐसे है। कोई सा॰ भी करना चाहे, फिर भी पढ़ाई बिगर तो पद मिलना नहीं है। जिन्होंने सा॰ कुछ भी नहीं किया, वह सा॰ करने वालों से भी ऊँच पद पा सकते हैं। बाकी सा॰ से क्या फायदा हुआ! बाबा जाँच करते हैं तीखे कौन जाते हैं। अगर आत्मा का भी किया है, परमात्मा का भी सा॰ किया है, तो वह सभी से तीखे जानी चाहिए। जाँच करनी पड़े। बाबा को सा॰ के लिए कहते हैं, तो बाबा समझ जाते हैं सा॰ न होगा तो दिन सिकस्त(दिलशिकस्त) रहेगी। पुरुषार्थ कर न सकेंगे। बाबा जानते हैं सा॰ से कब फायदा नहीं हो सकता। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध

मिलती है। हम आत्माएँ परमपिता परमात्मा की संतान हैं। यह तो एकदम निश्चय हो जाना चाहिए। बाकी है सारा पढ़ने और पढ़ाने पर मदार। तुमको सा॰ आपे ही हुआ या इच्छा हुई? बाबा तो समझते हैं इच्छामात्रम् अविद्या। यहाँ तो बात ही एक है। बाप के बने हो तो बाप से विश्व की बादशाही का वर्सा मिलता है। समझते हैं वह हमारा बाप है। आत्मा जानती है बेहद के बाप के हम बच्चे हैं। ऐसे नहीं कि सा॰ कर, पीछे बने हैं। यह तो बुद्धि से समझना होता है। बरोबर हमारे दो बाप हैं। वह भी निराकार है, हम आत्माएँ भी निराकार हैं। बुलाते भी उनको हैं। वही आकर नॉलेज सुनाते हैं। इसमें देखने न देखने का तो सवाल ही नहीं उठता। बाप के ज्ञान से ही सिद्ध होता है। मनुष्य से देवता बनने का ज्ञान बाप ही देते हैं। बाबा सभी से पूछते भी हैं तुम किसके पास आये हो? कहते हैं शिवबाबा के पास। बिगर सा॰ के निश्चय, नहीं तो फिर यहाँ आये क्यों हो? तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। और कहाँ भी सतसंगों में ऐसे नहीं कहेंगे कि देह के सभी धर्मों को छोड़ मुझ एक बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। यह तो बाप ही कहते हैं। बाकी सा॰ आदि से कुछ फायदा नहीं है। फिर भी माया साथ युद्ध चलती है। ऐसे नहीं कि वह हरा नहीं सकती है। सा॰ करने वालों से भी, न करने वाले तीखे चले जाते हैं। सा॰ का सवाल भक्तिमार्ग में होता है। यहाँ ज्ञान मार्ग में होता नहीं। ज्ञानमार्ग बिल्कुल अलग है। बाप समझाते हैं सा॰ से कुछ भी फायदा नहीं होता। उन्हों को तो नीचे उतरना ही है। तमोप्रधान बनना ही है। बाकी फायदा क्या। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा से हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलना ही है। सभी को बाप से वर्सा ज़रूर मिलना है। बाप खुद कहते हैं जो भी मनुष्य मात्र हैं बि... देखे जाने उन सभी की सद्गति कर ही देता हूँ; क्योंकि तुम बच्चे पढ़ रहे हो तो तुम्हारे लिए नई दुनिया ज़रूर चाहिए। बाकी सभी को घर ले जाता हूँ। बाकी सा॰ से कुछ फायदा की बात नहीं। सा॰ वाले भी हराये लेते हैं, तो फायदा क्या हुआ? बाप तो कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कटे, और कोई उपाय है नहीं। एक बाप से सभी बच्चों को एक ही मत मिलती है, वह है सुप्रीम मत। बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। 5000 वर्ष पहले भी तुमको ऐसे ही समझाया था; क्योंकि तुम बुलाते रहते हो, हे पतित-पावन बाबा आकर हमको पावन बनाओ, सद्गति दो। तो तुम्हारे कारण सभी को सद्गति मिल जावेगी। फिर उनको सा॰ होता है क्या? अहो प्रभु तेरी लीला कहते हैं वह भी बेसमझ से। बेहद का बाप आया हुआ है। विनाश से पहले ज़रूर स्थापना होगी। पहले-2 देवी-देवताओं की ही राजधानी थी, और तो सिर्फ अपना-2 धर्म स्थापन करते हैं। राजधानी नहीं स्थापन करते हैं। कोई भी आकर राजयोग सिखला न सके। ऊपर से एक आता है, वह आकर धर्म स्थापन करते, फिर एक-एक के पिछाड़ी सभी आते जाते हैं। यह राजधानी तो हो न सके। जब लाखों के अंदाज में हों, तब फिर राजाई कर सकें। यह समझ की बात है ना। बाप कहते हैं एमऑबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह है पावन, तुम हो पतित। इसलिए बुलाते हो हमको पावन दुनिया का मालिक बनाओ। वहाँ है ही देवी-देवताओं का राज्य; परंतु मनुष्यों की पत्थर बुद्धि ऐसी है जो इतनी सहज बात भी बुद्धि में नहीं आती। समझते हैं कलियुग तो अजन रेड़ी पहन रहा है। यह कैसे हो सकता! तुम तो निश्चय से कहते हो ना। बाप से पढ़ना इसमें भक्ति की तो बात ही नहीं। कोई कहे सा॰। बोलो, हियर नो ईविल। हमको सा॰ हो यह तो सुनना नहीं चाहिए। दरकार ही नहीं। बाप को जानने से बच्चे सभी कुछ जान जावेंगे। परमपिता-परमात्मा को जान उनका वर्सा सद्गति का मिल जावेगा। परमात्मा हमारा बाप है, हम उनके बच्चे हैं, फिर हम कलियुग में व.... हैं। सतयुग में क्यों नहीं हैं? बाप उत्तर देते हैं तुम बरोबर देवताएँ थे। फिर 84 जन्म लेते-2 यह बने हो। अभी तुमको देवता बनाते हैं। इसमें सा॰ की तो बात ही नहीं। यह आस न रहनी चाहिए। आस पूरी न होने फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। यह भक्तिमार्ग की आस है। इस ज्ञानमार्ग में आस आदि उठ नहीं सकता। सा॰ .... हुआ वह भी समझ तो है नहीं। आत्मा तो एक जैसी है, कैसे मालूम पड़ेगा कि यह शिव है? आत्मा क्या ..... यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते। अभी तुमको कितना ज्ञान मिलता है! समझो आत्मा का सा॰ भी हुआ; परंतु

फिर भी समझ भी चाहिए ना। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। ज्ञान बिगर सा॰ हुआ वह क्या बड़ी बात हुई! रिंचक भी फायदा नहीं। बिन्दी देखा फिर क्या फायदा! भक्तिमार्ग में भी ज्ञान नहीं है तो गिरते ही जाते हैं। यहाँ भी ज्ञान नहीं है तो कोई काम के नहीं। बाप कहते हैं जो सा॰ करके ज्ञान उठाते हैं तो कच्चे हो जाते हैं; क्योंकि सिर्फ सा॰ की ओट पर चलते हैं। बिगर सा॰ वाले बिगर कोई ओट के चलते हैं। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बाबा पूछेंगे सा॰ से क्या फायदा हुआ। आत्माएँ तो ढेर के ढेर हैं। सा॰ किया सो क्या हुआ! बाबा पूछेंगे सा॰ कब, कैसे हुआ। बाबा जबकि खुद बैठ पढ़ाते हैं फिर देखेंगे क्या? तुम मेरे बच्चे हो ना। तुमको कहता हूँ मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। ऐसे और कोई बोल न सके। सुनकर कहेगा तो वह झूठा निकल पड़ेगा। उसका तीर किसको लगेगा ही नहीं। हाँ, अच्छी रीत समझकर फिर किसको कहते हैं तो समझेंगे ज़रूर इनको निश्चय है तो तब तो कहते हैं ना। पूछेंगे, तुम यह कहाँ से सीखे? आश्रम कहाँ है? झूठ तो कोई की चल न सके। भल खुद निश्चय न होता है, दूसरों को कहते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। ऐसे किसका कल्याण कर सकते हैं। अपना कर न सके। पतित-पावन बाप को याद करने से ही पाप कटने हैं। भल खुद ब्राह्मण न हो; परंतु दूसरों को मंत्र दे देवें तो उनका फायदा हो सकता है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाकी सा॰ आदि से कुछ भी होना नहीं है। यह भक्तिमार्ग की पुरानी आदत है। कृष्ण की कितनी भक्ति करते हैं। सा॰ भी हो जाये किसको; परंतु फायदा कुछ भी नहीं, और ही गिर पड़ते हैं। बिगर निश्चय तो कोई यहाँ आ न सके। पढ़ेंगे ही कैसे? ब्राह्मण कैसे कहलावेंगे? अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

31/10/68 प्रातः क्लास की रही हुई प्वाइंट्स :–

तुम बच्चे जानते हो हम स्वर्ग में आवेंगे तो वहाँ बाप को याद नहीं करेंगे। बाप अभी कितना याद कराते हैं जो तुम्हारे नाक में दम चढ़ा देते हैं। सतयुग में जावेंगे तो फिर कभी नहीं याद करेंगे। कितना वण्डर है! बाप कहते हैं–अच्छा, वहाँ तुम भल याद नहीं करना; परंतु अभी तो करो ना। फिर क्यों कहते हो बाबा भूल जाता हूँ? सतयुग में भल भूलना, यहाँ तो नहीं भूलो ना। संगम पर ही तुमको यह समझाया जाता है। अच्छा, अभी याद करने का पार्ट है तो करो ना। यहाँ तुम जब सम्मुख आते हो तो तुमको भासना अच्छी आती है। यह खुशी फिर आस्ते-2 सोडावाटर हो जाती है। बाप को तो बहुत खुशी से याद करना पड़े। बच्चे भी फील करते हैं, बाबा कहते हैं बिल्कुल ठीक है। यह नॉलेज है। ऐसे नहीं कि बाबा अंतर्यामी है। बाप फिर बच्चों को कहते हैं अभी याद करो। अपना पद तो पा लो। बाप की प्लैनिंग ही अपनी है। वह तो सभी जानते हैं। भारत को सुखी बनाना बाप का ही काम है। ऑफ़िसर लोग अनेक राय निकालते हैं। प्लैन बैठ बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम अपना प्लैन अपने पॉकेट में रखो। हम ऐसा प्लैन बनाते हैं जो भारत ही स्वर्ग बन जावेगा। उसमें सभी सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम सभी के बदली हमारा बाबा का प्लैन भारत को स्वर्ग बनाता है। वह हमारा तो क्या, तुम्हारा भी बाबा है। उनके पास सारी प्लैनिंग है कि कैसे नर्कवासी को स्वर्गवासी बनाना है। कितना सहज प्लैन है! इसलिए उनको जादूगर भी कहते हैं। तो ऐसे बाप का मददगार बनना चाहिए। इसमें देहीअभिमानी भी बहुत चाहिए। फ़ैमिलिरिटी भी बहुत खराब है। इसमें बड़ी सम्भाल चाहिए, हँसी की बात नहीं। टाइम वेस्ट न करना है। इससे तो बाप को याद करने में कल्याण होगा। हँसी-कुड़ी में बहुत ही नुकसान हो जाता है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो, हम सभी भाई-2 हैं। सभी ब्रदर्स हैं। सभी बच्चों को वर्सा लेने का हक है। तुम सभी हकदार हो। अभी टाइम है। तुम मेरा पा सकते हो। बाकी लौकिक बाप का वर्सा नहीं पा सकेंगे। शरीर पर भरोसा नहीं है। तो भी जीते रहे तो वर्सा पा लेंगे। बाप ही आकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं। ओम